

० ३-११-१५ ओम् शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन
प्रभु प्यारों का संगठन संगम के इस महान समय में ही होता है, हर बच्चे के दिल में बाबा
और बाबा के दिल में सिकीलधे बच्चे बो हैं



यह मिलन अमर बनाने वाला मिलन है। हर एक बच्चा अमर भव के वरदानी है।



सबके मुख से क्या निकल रहा है ? वाह बाबा वाह ! और बाप के मुख से यही बोल निकल रहे हैं - वाह मेरे सिकीलधे बच्चे वाह ! वाह !



सबके दिल का आवाज चाहे दूर हैं, चाहे नजदीक हैं लेकिन सबके दिल का आवाज रेसपान्ड कर रहा है सबके फेस से आटोमेटिक वाह वाह निकल रहा है।



इस समय सारी सभा के दिल का आवाज वाह बाबा वाह! बाप का आवाज वाह बच्चे वाह! सब वाह वाह हैं। भले पुरुषार्थी हैं, नम्बरवार भी हैं लेकिन हर एक के मन का आवाज एक ही है वाह वाह! सोच क्या रहे हैं! वाह वाह कर रहे हैं



चाहे नम्बरवार भी हैं लेकिन बाप के बच्चे हैं इसलिए जैसे बाप वाह वाह है, हर एक की दिल में क्या बज रहा है? वाह बाबा वाह।



भले नम्बरवार हैं लेकिन हर एक के जीवन का लक्ष्य क्या है ? विश्व में अगर वाह वाह का संगठन देखना हो तो कहाँ देखने में आयेगा ?



सब प्रभु प्यारे हैं। तो यह संगठन प्रभु प्यारों का है। हर एक चाहे नम्बरवार हो लेकिन मूल आधार सबका एक है।



यह मिलन इस समय का मिलन कितना महान है! सारे कल्प के अन्दर अगर महान समय है तो अब है इसीलिए गायन है संगमयुग महान युग है। बापदादा इसी महानता से बच्चों से मिल रहे हैं। बच्चे कहते हैं बाप महान है, बाप क्या कहते हैं? चाहे कैसा भी बच्चा है लेकिन बाप का अति प्यारा है।



बाप के प्यारे, लाडले बैठे हैं और कितने साधारण बैठे हैं।



बाप ने देखा हर एक ज़ोन समय पर अपना पार्ट अच्छा बजा रहे हैं और आप सब भी हर ज़ोन के सेवा से सन्तुष्ट हैं ना! सन्तुष्ट है ?



हर एक बच्चा चाहे इन्डियन हैं, चाहे विदेशी है लेकिन हर बच्चा अच्छे पुरुषार्थ में लगे हुए हैं।
हर एक के मन में यही है कि नम्बर आगे से आगे लेना ही है।



चाहे नम्बर कैसा भी हो लेकिन बाप का प्यार लास्ट बच्चे से भी ज्यादा है क्योंकि हर एक याद में बैठते हैं तो किसकी याद में बैठते हैं? बाप की याद में बैठते हैं।



बाप ने देखा है कि हर बच्चे का भी बाप से प्यार है तभी चल रहे हैं। अगर बाप से कनेक्शन नहीं हो तो शक्ति कहाँ से लेंगे। बाप से ही तो शक्ति लेके चल रहे हैं। बच्चों का प्यार बाप से अच्छा है। और बाप का प्यार हर बच्चे से है। कहाँ भी है चाहे देश, चाहे विदेश लेकिन हर बच्चा बाप का प्यारा है। चाहे कोई भी हो, बाप का प्यार चला रहा है। बाप को याद ही नहीं करेंगे तो शक्ति कहाँ से मिलेगी। हर एक का सम्बन्ध बाप से है। कोई कहे हमारा बाप से प्यार नहीं है, वह हाथ उठाओ। जो अपने आपको समझते हैं कि हम अपने पुरुषार्थ से चल रहे हैं। पुरुषार्थ कितना भी करें, कोई समझते हैं कि हम अपने पुरुषार्थ से चल रहे हैं, तो वह हाथ उठाओ।

सदा बाबा साथ है। हर बच्चे के साथ है। सदा बाप साथ है, ऐसे अनुभव होता है? बाप हर एक बच्चे के सदा साथ है, बाप एक होते भी सबसे निभा सकता है।



बाप के साथी हैं, एक-एक के साथ बाप है और साथ रहेंगे ।



सभी बाप के दिल में समाये हुए हैं। सभी दिल में हैं ना ? दिलवर कौन ? बापदादा ही तो दिलवर है। बच्चों का दिल भी बाप के साथ है ही। बिना बाप के साथ के कोई है ही नहीं। साथ हैं, साथ रहेंगे। सभी सदा साथ के अनुभव में रहते हैं ना !



जितना भी बढ़ाने चाहो उतना बढ़ा सकते हो, चाहे जगदम्बा, चाहे कोई कार्य के निमित्त कोई बच्चा भी है, तो भी हर एक बढ़ सकता है और बढ़ रहा है। बापदादा को खुशी है कि हर एक बच्चा आगे बढ़ रहा है। जितनी भी ताकत है उतना अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। हर एक बच्चे में उमंग उत्साह अच्छा है। बापदादा खुश है कि हर एक बच्चा सदा अपने पुरुषार्थ में लगा हुआ है और लगा रहेगा।



सभी अच्छे पुरुषार्थ में आगे बढ़ रहे हैं, यह देख बापदादा खुश है। कुछ भी हो लेकिन अपना पुरुषार्थ अपने साथ है और सारा परिवार भी साथ है, अकेले नहीं हो। साथी हैं और साथ रहेंगे। हर एक के दिल में एक ही बाप याद है।



८ नवम्बर को वहाँ बड़ा प्रोग्राम रखा है, वहाँ दोनों दादियां आ रही हैं उसमें विशेष हम क्या करें?) विशेष यही है कि बाप को प्रत्यक्ष करना है। बाप को प्रत्यक्ष करना अर्थात् सब कुछ करते सब सम्बन्ध एक बाप से रखना है। तो बाप से सम्बन्ध रखने का आधार बहुत अच्छा है। खास संगठित प्रोग्राम रखना है। कोई भी नहीं समझे कि यह दिल्ली का प्रोग्राम है। सबका बाप है, सबका प्रोग्राम है। भले कोई नजदीक है, कोई दूर है लेकिन है सभी का। यही उमंग उत्साह है और इसी को ही बढ़ाना है। कहाँ भी प्रोग्राम है लेकिन हमारा है। एक ही परिवार है। एक ही सबका बाप है। एक हैं, चाहे अनेक दिखाई देते हैं लेकिन सभी एक हैं। यही विशेषता यहाँ की है, टुकड़ा टुकड़ा नहीं है।



जो भी कार्य चलता है ना उसमें सभी का साथ है। एक का नहीं, ब्रह्माकुमारियों का है, कुमार उसमें आ गये। सबकी मदद से बाप के साथ से आगे बढ़ते चलो।



जो भी तबियत में थोड़ा बहुत होता है, तो समय कलियुग का है, इसमें यह सब तो आता ही है लेकिन सब कुछ होते हुए बाप की याद में सूली से कांटा बनाना है। आवे कितना भी सूली के रूप में लेकिन बाप की याद से कांटा बन जाये।

